हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं

मंगलवार, 13 फरवरी 2018, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 23, अंक 37, 22 पेज, मूल्य ₹ 3.00, फाल्गुन, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रम सम्वत 2074

मुहूर्त और पूजा ..

आज बन रहा शिवरात्रि का योग

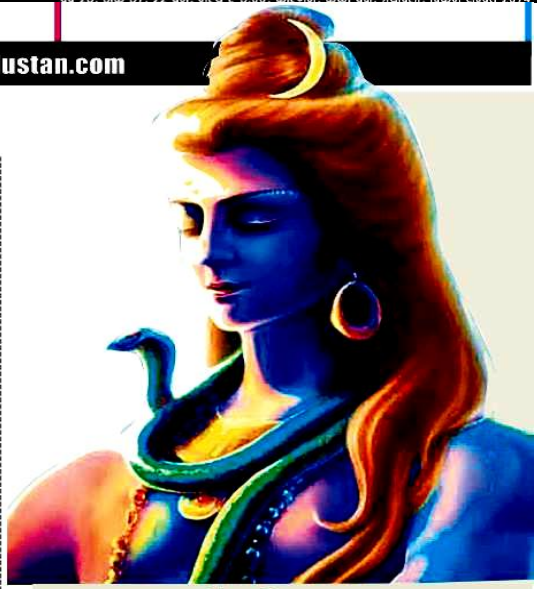

महाशिवरात्रि व्रत का पालन फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है। इस बार यह पावन पर्व मंगलवार को मनाया जाएगा। ज्योतिषाचार्य एसएस नागपाल ने बताया कि इस पर्व के निर्णय में ईशान संहिता में कहा गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की महानिशा में आदि देव करोड़ों सूर्य की क्रांति वाले लिंग स्वरूप शिव उत्पन्न हुए अतः शिवरात्रि व्रत में व्यापिनी तिथि ग्रहण करना चाहिए। मंगलवार को सम्पूर्ण रात्रि चतुर्दशी रहेगी। अतः इस दिन ही शिवरात्रि व्रत व जागरण करना उचित होगा।

शिव पूजन

शिव पूजन में स्नान के बाद शिवलिंग का अभिषेक जल, दूध,दही घृत, मधु, शर्करा (पंचामृत) गन्ने का रस चन्दन, अक्षत, पुष्पमाला, बेलपत्र, भांग, धतूरा इत्यादि से मनोकामना पूरी करने के लिए किया जाता है। इस दिन 'ऊं नमः शिवाय' मंत्र का जाप करना चाहिए। शिवरात्रि में प्रातः और रात्रि में चार प्रहर के शिव पूजन का विशेष महत्व है।

पूजा का समय

महाशिवरात्रि पर निम्न तरीकों से भगवान भोलेनाथ की आराधना करने से भक्तों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। शक्ति ज्योतिष केन्द्र के पंडित शक्तिधर त्रिपाठी ने बताया कि इस वर्ष का यह शुभ योग 13 व 14 फरवरी मंगलवार और बुधवार दोनों दिन मिल रहा है, किन्तु 14 फरवरी बुधवार प्रदोष काल से निशीथ काल तक चतुर्दशी होने से अति उत्तम है। उन्होंने बताया कि महाशिवरात्रि का समय स्वयं सिद्ध माना गया है। किसी शुभ कार्य को प्रारम्भ करने के लिए यह अति उत्तम है।

दो दिन रहेगी बोल बम की धूम: देखें पेज 21

वैज्ञानिक महत्व

प्रो. भरत राज सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक

शिवरात्रि के दिन शिवलिंग की पूजा के वैज्ञानिक कारण के बारे में वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि शिवलिंग एनर्जी का पिंड है जो गोल, लम्बा-वृत्ताकार में सभी शिव मंदिरों में स्थापित होता है। इसमें ब्रह्माण्डीय शक्ति को सोखने की अधिकतम क्षमता होती है। लोग रुद्राभिषेक, जलाभिषेक, भस्म आरती, भांग-धतूरा-गांजा व बेल पत्र चढ़ाकर पूजा करते हैं और उसमें मौजूद शक्तिशाली ऊर्जा को अपने शरीर में ग्रहण करते हैं। पूजन सामग्रियों में ऊर्जा स्थानांतरण की क्षमता होती होती है। वह नकारात्मक ऊर्जा समाप्त करती है।